ISSN : 2583-2948

वंदना सिंह

स्वतंत्र कवयित्री एवं लेखिका

बड़ा परिवार, गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय कैम्पस, हरिद्वार, उत्तराखंड

Contact no. 7060584402

Email-vandanasv14@gmail.com

"मैं भी पांचाली"

क्यों हर वस्तु में दिखता है दाग

क्यों दिखता है आँखों को वो सब

जिसे देख दिल हो जाता उदास।

क्यों न ऐसा प्रत्येक वस्तु

ओढ़ के रखता सुन्दर लिबास

न दिखता हकीकत न टुटता विश्वास।

फिर भी पनप उठा है,

एक नहीं पूरे पांचों से प्यार

पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु और आकाश।

ISSN : 2583-2948

ब्रांडेड डायरियाँ

कुछ अजीज़ मित्रों ने भेंट किये

समय-समय पर कुछ खूबसूरत डायरियाँ।

काली,पीली ,नीली -नीली

और कुछ लाल-हरी डायरियाँ।

शब्दों से सजाती गई,

अलमारियों में लगाती गई।

बस कोरी थी सबसे ब्रांडेड डायरियाँ।

इंद्रधनुष से भी खूबसूरत ,

रंगीन पन्नों वाली डायरियाँ।

सोची, इसमें लिख दूँ कुछ भ्रष्टाचार

और कुछ दमित शोषितों की परेशानियाँ

डायरी खोलते ही प्रथम पृष्ठ पर,

चमक उठी मोती जड़ित कुछ पंक्तियाँ।

बड़ी शालीनता से लिखा गया था-

तुम पाताल को आकाश लिखना,

फर्स को अर्श लिखना,

घाटे को मुनाफा लिखना,

बबूल को चंदन लिखना

अंततोगत्वा हमारा वंदन लिखना

पक्की समझना अपनी

रातों - रात तरक्कियाँ।